शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अल्बर्ट संग्रहालय में प्रदर्शित ईरानी कालीन का सौन्दर्यात्मक स्वरूप

डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला (निर्देशक)
रूचि जोशी (शोधार्थी)
चित्रकला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

प्राचीन काल से ही ईरान के कालीन प्रसिद्ध रहे हैं। राजाओं और महाराजाओं को ईरानी कालीन अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं। आज अनेक कालीन देश के विभिन्न संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं। इन कालीनों का अनेक दृिशत्यों से अध्ययन किया जा रहा है। जयपुर के अलबर्ट संग्रहालय में ईरान का कालीन मौजूद है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसका सौन्दर्यात्मक विश्लेषण किया गया है।

भूमिका

संग्रहालय - नाम से ही स्पष्ट हो जाता है। ऐसी विलक्षण वस्तुओं का आलय जो विभिन्न काल एवं विभिन्न वर्गो के व्यक्तियों की सांस्कृतिक गतिविधियों को जनमानस के सम्मुख प्रकट करते हैं। यह हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की परिचायक होती है।

"संग्रहालय नाम के लिये एक छोटा शब्द है। परन्तु इस शब्द के मर्म में बहुत कुछ निहित है। इसके द्वारा प्राचीन कला कौशल एवं इतिहास सामने आता है।"

संग्रहालय को किसी भी देश के सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य का प्रतीक माना जा सकता है, क्योंकि संग्रहालय के माध्यम से ही हमें प्राचीनकाल के सामाजिक जीवन, वेश-भूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, सभ्यता, संस्कृति, परम्परा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

"संग्रहालय के लिये अंग्रेजी भाषा के Museum शब्द का प्रयोग किया जाता है। Museum शब्द लैटिन भाषा का है जो यूनानी शब्द Museion से लिया गया है। इसका अर्थ कला तथा विज्ञान की सामग्री का संग्रह स्थान नहीं होकर यूनानी देवी Muses को समर्पित मन्दिर था जो विज्ञानों और कलाओं की देवी मानी जाती थी। पहले इन देवियों की संख्या तीन थी जो पीछे बढ़कर नौ हुई। ये ओलम्पस पर्वत की घाटी पियेरिया में पैदा हुई। इनमें प्रत्येक कला, साहित्य और विज्ञानों की एक शाखा की प्रधान थी। अतः प्रकृति और मनुष्य के ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का सम्बन्ध इन्हीं ज्ञान की देवी के साथ जोड़ा है। इसी से Museum अर्थ बताया गया है - Temple of Muses (ज्ञान का मन्दिर)।"2

संग्रहालय ज्ञान का एक ऐसा केन्द्र है, जहां आकर शोधार्थी तो ज्ञान अर्जित करते ही हैं। साथ ही जन मानस भी अपने दैनिक जीवन की चिन्ताओं को भूलकर अतीत की सामग्रियों से रूबरू होता है तथा अपनी प्राचीन विरासत से एकाकार होता है।

अल्बर्ट संग्रहालय का ईरानी कालीन

संग्रहालय वह स्थान है जहां विभिन्न संस्कृतियों के साक्ष्य एकत्र रूप में देखने को मिलते हैं। भारत भूमि कला की जननी है। भारत देश में कई संग्रहालय है, जो देश के विभिन्न शहरों में स्थित है। उन्हीं में से एक जयपुर में स्थित अल्बर्ट संग्रहालय है। इस संग्रहालय की एक विशेषता यह है कि इसमें देश-विदेश से लायी गयी अनेक कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जिससे दर्शकों को अन्य देशों की संस्कृतियों से रूबरू होने का अवसर भी प्राप्त होता है।

अल्बर्ट संग्रहालय में विभिन्न देशों से लायी गई सामग्रियों को देखने के लिए रखा गया है, जिनमें से एक है - ईरानी कालीन, जिसकी बुनाई चारबाग प्रकार के ईरानी बगीचे के आधार पर हुई है।

"दुनिया में चारबाग शैली के कुछ ही कालीन बच रहे हैं जिनमें जयपुर का यह कालीन सर्वश्रेष्ठ एवं प्राचीनतम है। यह संभवतः किरमान का बना है जो 17 वीं शती ईरान के पूर्वार्द्ध में कालीन बुनाई का प्रमुख केन्द्र था। इसकी खरीद आंबेर के महलों के लिये मिर्जा राजा जयसिंह के समय में 1632 ई. में हुई थी।"

कालीन शब्द से तात्पर्य ऊन के बने हुए एक प्रकार के मोटे बिछावन से है। जिस पर रंग-बिरंगे बेल बूटे बने रहते है। "कालीन (अरबीः क़ालीन) अथवा गलीचा (फारसीः ग़लीचः) उस भारी बिछावन को कहते हैं जिसके ऊपरी पृष्ठ पर साधारणतः ऊन के छोटे-छोटे किंतु बहुत घने तंतु खड़े रहते हैं। इन तंतुओं को लगाने के लिये उनकी बुनाई की जाती है।"

"कालीन की बुनाई के लिये मजबूत सूती या हेम्प के धागे के ताने का प्रयोग करते हैं। इसके लिये साधारण करघे का प्रयोग करते हैं। मुख्य कारीगर नक्षबंद कालीन की रुपरेखा तैयार करता है और उसी के अनुसार ताने के धागों पर ऊनी धागों से डिजाइन के आधार पर गांठें लगाई जाती हैं। डिजाइन को पहले ग्राफ पेपर पर तैयार कर लेते हैं। जिसमें विभिन्न रंगों का प्रयोग किया जाता है। जब पाइल की एक पंक्ति पूरी हो जाती है तब बाने का धागा तानों को उठाकर शेड में से निकालते हैं, फिर कंघी से कस दिया जाता है। इस तरह डिजाइन के अनुसार पूरा कालीन बनाया जाता है फिर समान मोटाई देते हुये पाइल के सिरों को काटा जाता है। अन्त में ब्रश से साफ किया जाता है।"

कालीन को बुनने के लिये मुख्यतः सूती या ऊनी धागों का ही प्रयोग किया जाता है। कालीन बुनने से पूर्व इन्हें अच्छी तरह से रंग लिया जाता है। कालीन को रंगने के लिये मुख्यतः गहरे रंगों का प्रयोग किया जाता है। अल्बर्ट संग्रहालय में प्रदर्शित कालीन का अधिकांश भाग भी लाल रंग का बना है। "इसका ताना चौहरा/चार गुना सूती धागों का है और बाना भूरे रंग की ऊनी और रेशमी धागों की दुहरी गांठों का है। कालीन की लम्बाई 28'4'' और चौड़ाई 12'4'' है।"

कालीन शब्द का प्रचलन प्राचीन ईरान से भारत आया। ईरान का पुराना नाम फारस है। ईरान अपनी मूल्यवान संस्कृति एवं कला के लिये प्राचीन समय से ही प्रसिद्ध रहा है और आज भी अपनी नक्काशी के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है।

अल्बर्ट संग्रहालय में प्रदर्शित कालीन, जिसकी बुनाई चारबाग प्रकार के ईरानी बगीचे के आधार पर हुई है, "पूरे कालीन को पानी की नहरों से चार भागों में बांट दिया गया है, ये टुकड़े भी आगे जाकर दो या दो से अधिक भागों में बंटते है। बीच के बड़े तालाब के चारों ओर चौखाने हैं और तालाब के बीचोंबीच ऊँचा मण्डप है जिसके ऊपर गुंबद है, उसके सुसज्जित भीतरी भाग में सिंहासन रखा है जो संभवतः बादशाह के लिये है, ताकि इस पर बैठकर उद्यान का आनंद ले सकें। फुलवारी और फलों के बगीचों की सिंचाई के लिये पानी का प्रबन्ध बीच की नहर से धाराएं निकाल कर किया गया है। इस योजना की शुरुआत शाह अब्बास महान (1526-1628) के समय में राजधानी इस्फहान में और उसके आस-पास की गई थी। इसीलिये इसे इस्फहानी पद्धति भी कहते हैं।"

इस कालीन में प्रकृति का भी चित्रण किया गया है। जिसमें बाग-बगीचे, फूल, फलों से लदे वृक्ष, और चहचहाते पक्षियों का भी अंकन किया गया है। इसके साथ ही शिकार करते हुए जानवरों को भी दर्शाया गया है, जो प्रकृति के शांत वातावरण को भंग कर रहे हैं। इस चित्रण से यह पता चलता है कि ईरानी कला प्रतीकात्मक है। इसमें अधिकतर काल्पनिक दुनिया का चित्रण किया है। जो उन कलाकारों के मन की बात को प्रकट करते है और हमें वास्तविकता के निकट लाते हैं।

"ईरानी कला का मिथक पौराणिक विचारों व अर्थो से गहरा व मजबूत संबंध है। पौराणिक विचारों में यह माना जाता है कि इंसान जमीन से पैदा हुआ है। जमीन को पेड़, फूल, हरियाली और नदी जैसे जीवन के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लिये जरुरी तत्वों को जीवन देने वाले साधन के रुप में कालीन पर चित्रित किया जाता है। इन डिजाइनों में जमीन को न सिर्फ जीवन गुजारने के स्थान बल्कि जीवन की उत्पत्ति के स्थान के रूप में दर्शाया जाता है।"

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ईरानी कालीन को विभिन्न दृष्टिकोण से देखना सुखद अनुभूति है। संग्रहालय ज्ञान एवं शोध के स्रोत्र होते है जो इन प्राचीन सभ्यताओं व कलाओं को सहेजने का कार्य करते है। ताॅकि हमारे देष वासी अन्य देश की सभ्यताओं से रुबरु हो सके व ज्ञान अर्जित कर सके। संग्रहालय एक ऐसा संस्थान है जिसमें आज से पूर्व बने हमारे पुरखों की धरोहर आज भी सभी संचित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 चतुर्वेदी जगदीश चन्द्र - कला के पद्म (उदय एवं विकास) ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया राजस्थान

2 सहाय, शिवस्वरूप- संग्रहालय की ओर, मोतिलाल बनारसीदास, प्रथम संस्करण 1992, पृ.सं 1

3 राजकीय केन्द्रीय संग्रहालय अल्बर्ट हॉल जयपुर से प्राप्त अप्रकाशित लेख

4 hi.m.wikipedia.org (कालीन-विकिपीडिया)

5 गुप्ता, मीनाक्षी - परम्परागत भारतीय वस्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण- 2007 पृ.सं-107,108

6 राजकीय केन्द्रीय संग्रहालय अल्बर्ट हॉल जयपुर से प्राप्त अप्रकाशित लेख

7 वही Parstoday.com ईरान की सांस्कृतिक धरोहर-30,